>

Title : Regarding reported mismanagement and carelessness in maintaining wheat and rice buffer stock.

श्री राजनाथ सिंह (ग़ाज़ियाबाद): अध्यक्ष महोदया, मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि आपने इस देश के गांव, गरीब और किसानों से जुड़े एक अहम सवाल को इस सदन में उठाने की मुझे अनुमति दी है।

महोदया, आप स्वयं स्वीकार करेंगी कि इस देश के हर नागरिक को जीने का अधिकार प्राप्त है और जीने का अधिकार हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन आज की विडम्बना है कि आज की सरकार लोगों के मौलिक अधिकार, जीने के अधिकार का पूरी तरह से हनन कर रही है। आज से तीन दिन पहले मुझे जानकारी प्राप्त हुई कि इस देश के एफसीआई के कई गोदामों में जो लाखों टन गेहूं और चावल रखा है, वह खुले आसमान के नीचे रखा है और वह पूरी तरह से सड़ गया है।

नॉर्मल गेहूं, सामान्य गेहूं में उसे मिलाकर पीडीएस के माध्यम से हिंदुस्तान के गरीबों को सप्लाई किया जा रहा है। जब यह जानकारी मुझे प्राप्त हुई तो हरियाणा राज्य के पलवल के एफसीआई के दो गोदामों पर मैंने स्वयं जाकर निरीक्षण किया और वहां पर गेहूं के जो कट्टे, बैग्स थे, उनके अंदर से निकालकर जब मैंने गेहूं देखा तो जैसा दृश्य मुझे देखने को मिला है, सचमुच जो कोई भी संवेदनशील प्राणी होगा, उसकी आंखों में आंसू आ जायेंगे। मैं आपको भी वह गेहूं दिखा चुका हूं कि नॉर्मल गेहूं के साथ किस तरीके से सड़ा हुआ गेहूं इस हिंदुस्तान के गरीबों को खाने के लिए दिया जा रहा है। मैडम, यदि आपकी इजाजत हो तो मैं उस गेहूं के एक-दो सैम्पल आपकी टेबल पर भी रख सकता हूं, यदि आप मुझे इजाजत दें तो मैं वह रखना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदया : अभी छोड़ दीजिए।

श्री राजनाथ सिंह : मैडम, उस गेहूं की यह हालत है।

अध्यक्ष महोदया : अभी आप छोड़ दीजिए।

श्री राजनाथ सिंह : यह गेहूं नॉर्मल गेहूं में मिलाकर आम लोगों को दिया जा रहा है। मैं तो बधाई देना चाहता हूं और मैं समझता हूं कि इस देश की संसद को हिंदुस्तान के सारे किसानों को बधाई देनी चाहिए, जिन किसानों ने सरकार को पीडीएस के लिए जितनी आवश्यकता है, उससे दो गुना, ढाई गुना फूड ग्रेन पैदा करने का काम किया है और बफर नॉर्म्स जो केवल दो सौ लाख मीट्रिक टन का होता है और जो एक्चुअल स्टाक एफसीआई के गोदामों में रखा है, वह 453.33 मिलियन टन से अधिक एक्चुअल स्टाक एफसीआई के गोदामों में रखा हुआ है। लेकिन गरीबों को वह गेहूं मुहैया नहीं हो पा रहा है। वर्ष 2007-08 का रखा हुआ गेहूं आज खुले आसमान के नीचे सड़ रहा है। मैं जानना चाहता हूं कि क्यों नहीं गेहूं की सप्लाई की जाती है? आज गरीब भूखों दम तोड़ रहे हैं, भूख के कारण मरने वालों की घटनाएं आये दिन समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। लेकिन यह हुकूमत गेहूं और चावल होते हुए भी गरीबों की थाली तक रोटी नहीं पहुंचा पाती है। इसलिए इस हुकूमत को बने रहने का कोई औचित्य अब नहीं रह गया है।

मैडम स्पीकर, मैं कहना चाहता हूं कि आपके द्वारा इस देश के खाद्य मंत्री और सरकार को इस अहम् सवाल के संबंध में निर्देश दिया जाना चाहिए कि इस संबंध में वह इस संसद में एक स्टेटमैन्ट जारी करें कि एक्चुअल स्थिति क्या है? मैं जानता हूं कि 1968 में डा. पांजे की चेयरमैनशिप में एक कमेटी बनी थी, जिसने अपनी रिपोर्ट दी थी और कहा था कि इस देश में जितना खाद्यान्न पैदा होता है, उसका लगभग 9.33 परसैन्ट पूरी तरह से बर्बाद हो जाता है, नष्ट हो जाता है, सड़ जाता है। लेकिन 1968 के बाद कोई ऐसी कमेटी नहीं बनी है, जो इसका असैसमैन्ट कर सके कि किसानों के पसीने और खून की कमाई जो वह अन्न के रूप में पैदा करता है, उसका कितना प्रतिशत नष्ट हो जाता है। एक दिन मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि आज भी किसानों के द्वारा पैदा किया जो खाद्यान्न बर्बाद हो जाता है, नष्ट हो जाता है, गरीबों तक नहीं पहुंचता है, वह लगभग 60 हजार करोड़ रुपये से अधिक का खाद्यान्न हिंदुस्तान में नष्ट हो जाता है, लेकिन सरकार उसकी चिंता नहीं करती है।

मैडम स्पीकर, मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि इस संबंध में एक स्टेटमैन्ट जारी किये जाने का निर्देश आपके द्वारा दिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे बड़ा अहम् सवाल कोई दूसरा नहीं हो सकता है, क्योंकि यह जीने के अधिकार से जुड़ा हुआ सवाल है।

दूसरा यह निर्देश भी आपके द्वारा दिया जाना चाहिए कि जो सड़ा हुआ खाद्यान्न है, वह किसी भी सूरत में सामान्य खाद्यान्न में मिलाकर पीडीएस के जरिये नहीं बेचा जाना चाहिए। इस संबंध में एक कमेटी भी बनाई जानी चाहिए, जो इस बात का पता लगा सके, असैसमैन्ट कर सके कि इस समय हिंदुस्तान में एफसीआई के गोदामों में कितना गेहूं सड़ गया है और संसद को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए। साथ ही साथ यह रिस्पांसिबिलिटी भी सुनिश्चित की जानी चाहिए कि इतने बड़े अपराध के लिए कौन लोग रिस्पांसिबल हैं, इतने बड़े क्राइम के लिए कौन लोग रिस्पांसिबल हैं? उन्हें भी आइडेन्टिफाई किया जाना चाहिए और उन्हें पनिश किया जाना चाहिए। यही मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं। आपने मुझे इस प्रश्न को उठाने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी (वाराणसी): महोदया, इसमें एक जेपीसी की नियुक्ति की जानी चाहिए, जो सारे फूड कारपोरेशन ऑफ इंडिया की जांच करे। इसलिए आप ज्वाइंट पार्लियामैन्ट्री कमेटी की नियुक्ति तत्काल करवाने का आदेश दें।

इसमें जेपीसी की नियुक्ति होनी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : उनके बाद आप बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): महोदया, यह बहुत गंभीर सवाल है कि गेहूं सड़ रहा है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : इनके बाद आप बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : महोदया, दूसरी तरफ और गंभीर संकट है कि गोदामें भरी पड़ी हैं और जखीरा बाहर पड़ा है। इस साल किसानों के गेहूं की खरीद नहीं हो रही है। यह दूसरा सबसे बड़ा सवाल और पैदा हो गया है। गेहूं सड़ रहा है। यह सही है कि लोग भूखे मर रहे हैं, ऐसा रोज अखबारों में आ रहा है। **...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, अब आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : महोदया, इस साल भी किसानों का गेहूं नहीं खरीदा जा रहा है। हिन्दुस्तान में 72 फीसदी किसान हैं, क्या हिन्दुस्तान किसानों के बिना विकास कर लेगा? हम यह साफ कहना चाहते हैं कि अगर हिन्दुस्तान का विकास करना है तो किसानों को ही आगे लाना पड़ेगा। जो 72 फीसदी किसान हैं, उनका गेहूं नहीं खरीदा जा रहा है। खरीद की घोषणा हो गयी, खरीददार सरकारी काम पर पहुंच गये, लेकिन गेहूं खरीदा नहीं जा रहा है। सवाल यह है कि वहां कांटे तो लगा दिये हैं, लेकिन गेहूं खरीदा नहीं जा रहा है। आज किसान मजबूर होकर जो 1100 रूपए सरकार का रेट है, को छोड़कर 900 रूपए में बाजार में बेचने के लिए मजबूर हो रहा है। आज यह हालत हो गयी है।

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, अब आप बैठिए।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): महोदया, जो सवाल उठाया गया है, गंभीर समस्या यह है कि इस देश में अभी गेहूं की नयी फसल आयी है, जिसके बारे में इन दोनों तरफ से माननीय सदस्यो ने कहा है। गोदामों में पुराना अनाज ही खुले में सड़ रहा है। नयी खरीद नहीं होगी। हमें मौसम का मिजाज पता नहीं है कि उसका क्या हाल होगा? मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि कुछ ही इलाकों में खरीद होती है, बाकी देश के इलाकों में कोई खरीद नहीं होती है। सबसे बड़ी असली समस्या यह है कि जो गोदाम हैं, मैं कोल्ड स्टोरेज की बात नहीं कर रहा हूं, मैं गोदामों की बात कर रहा हूं, हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा संकट गोदामों का है, स्टोरेज का है। आप बताइये कि जब सड़ा हुआ, खुले में अनाज पड़ा हुआ है तो इसके बाद जो नयी फसल है, उसे कौन खरीदेगा? जब खरीद ही नहीं होगी तो मौसम बदल गया है, इस देश की क्या हालत होगी? इसके साथ ही एक सवाल जो मैं पहले उठाना चाहता था कि जो आईपीएल है, हमने थरूर का सवाल नहीं उठाया था।**...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह विषय नहीं है।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरद यादव : हमने अकेले थरूर का सवाल नहीं उठाया था।**...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : श्री जगदम्बिका पाल जी।

श्री शरद यादव : महोदया, आईपीएल में जो घपला चला हुआ है, जो सट्टा चला हुआ है। **...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह विषयान्तर हो गया है। अब इसी विषय को चलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरद यादव : महोदया, यह गंभीर संकट है कि इस देश के सारे लुटेरे इसमें शामिल हैं।**...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : धन्यवाद, अब आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरद यादव : मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि यहां तो आपने मंत्री जी को हटा दिया है, लेकिन जो लुटेरे लोग हैं।**...**(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह इसके बाद आएगा।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: It is not over.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF WATER RESOURCES (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): Madam, I will bring to the notice of the hon. Food Minister the matter which has been raised by Shri Rajnath Singh and also by Shri Sharad Yadav.

MADAM SPEAKER: All right. Thank you.

But the matter continues and it will end with Shri Jagdambika Pal.

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): महोदया, मैं आपका बहुत आभारी हूं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह विषयान्तर हो गया है। अभी उसे भी ले रहे हैं।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : जगदम्बिका पाल जी, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल : शरद यादव जी, ने जो कहा है, वह भी साथ ही में है। मैं पूरी कोशिश करूंगा और एक ही बार में जवाब दूंगा।...(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल : महोदया, मैं एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण विषय को सम्मानित सदन के संज्ञान में लाना चाहता हूं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए, अभी उसे ले रहे हैं। अभी उस मैटर को भी उठाया जाएगा। आप उन्हें बोलने दीजिए। सिर्फ जगदम्बिका पाल जी की बात रिकॉर्ड में जाएगी।

â€¦(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल: महोदया, मैं एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण विषय को आपके और सम्मानित सदन के संज्ञान में रखना चाहता हूं। आज सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि जो रबी की फसल आज खेत में तैयार है, खलिहान में पहुंच रही है और केंद्र के द्वारा जो सेन्ट्रल पूल में राज्यों को गेहूं की खरीद करनी है, आज वह गेहूं की खरीद न होने के कारण किसान बिचौलियों को गेहूं 875 और 900 रूपये क्विंटल पर बेचने के लिए बाध्य हो रहे हैं। आज केंद्र के द्वारा 40 लाख मीट्रिक टन उत्तर प्रदेश की सरकार को गेहूं की खरीद करनी है। उस सरकार ने 4406 परचेज सेंटर खोलने की बात कही है।

अभी तक गेहूँ क्रय केन्द्र उत्तर प्रदेश में नहीं खुले। ...(व्यवधान) आप बैठिये। हमें बीच में डिसटर्ब मत कीजिए। यह कौन सी बात हुई? ...(व्यवधान) सुनना सीखिये। अध्यक्ष महोदय ने हमें बुलाया है। ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) â€¦ *

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त करिये।

श्री जगदम्बिका पाल : 40 लाख मीट्रिक टन की जगह केवल 1.15 लाख मीट्रिक टन खरीदा गया है...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, इनको रोकिये। इस तरह बोलने से क्या फायदा? ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record except what Shri Jagdambika Pal is saying.

*(Interruptions) â€¦**

अध्यक्ष महोदया : आप क्यों खड़े हो गए उमाशंकर जी? आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल : अध्यक्ष महोदय, अभी तक 40 लाख मीट्रिक टन की जगह केवल 1.15 लाख मीट्रिक टन की खरीद हुई है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आपका विषय समाप्त हो गया है। अब आप बैठ जाइए।

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए। आपकी बात समाप्त हो गई है। श्री टी.आर.बालू जी को बोलने दीजिए। पुनिया जी आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप क्यों खड़े हैं, आप बैठ जाइए। आपके अध्यक्ष ने बहुत विस्तार से सब बातें कह दी हैं। रामकिशुन जी, अब आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Only Shri T.R. Baalu's statement will go on record.

â€¦....(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Let us have some order in the House.

...(*Interruptions*)